Digital Education Portal

शिक्षा जगत

सरकारी नौकरी

प्रशिक्षण डायरी

शैक्षणिक खबरों से अपडेट रहने के लिए

हमें फॉलो सब्सक्राइब करें

https://t.me/digitaleducationportal

https://www.facebook.com/Digitaleducationportal

https://twitter.com/deelip_jaiswal

https://bit.ly/36Djsw7

https://educationportal.org.in

प्रदीप त्रिपाठी

उमरिया - D.R.G.

प्रशिक्षण - डायरी

"निष्ठा"

NISHTHA

National Initiative for School Heads' and Teachers' Holistic Advancement

कोर्स - 13

विद्यालय नेतृत्व - संकल्पना और अनुप्रयोग

उद्देश्य :- इस कोर्स से शिक्षक व शाला प्रमुख निम्न कार्य में सक्षम हो पायेंगे। -

- शिक्षक व प्रधानाध्यापक से जुड़ी हुई बहु - भूमिकाएं व दायित्वों के साथ - 2 अध्यापक नेतृत्व एवं विद्यालय नेतृत्व के दृष्टिकोण को समझने व विकसित कर पाने में।
- छात्र अधिगम व गुणवत्ता सुधार करने हेतु अकादमिक नेतृत्व विकसित करने में।
- साझे के सीखने में सहयोगात्मक अधिगम वातावरण निर्माण के माध्यम से शाला को आगे बढ़ाने के लिए ज्ञान, कौशल एवं दृष्टिकोण प्राप्त करने में।

सामग्री की रूपरेखा →

- विद्यालय नेतृत्व : एक संकल्पना
- छात्र अधिगम में शाला नेतृत्व का महत्तव
- छात्र अधिगम में सुधार हेतु अकादमिक नेतृत्व
- विद्यालय में अधिगम संस्कृति का विकास
- विद्यालय के विशेष संदर्भ में शाला विकास योजना ।

विद्यालय नेतृत्व : संकल्पना व अनुप्रयोग →

विद्यालय नेतृत्व स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता को लाने में अहम भूमिका निभाती है। विद्यालय नेतृत्व से छात्रो के अधिगम में वृद्धि के साथ-2 विद्यालय का संपूर्ण विकास होना संभव है। यह बात को N.C.S.L. ने भी माना है। विद्यालय की कायाकल्प करने में शाला प्रमुखो की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

विद्यालय नेतृत्व : संकल्पना और अनुप्रयोग को राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केन्द्र (NCSL) (नीपा) द्वारा विकसित किया गया है। इसमें विद्यालय स्तर में आने वाली चुनौतियों का सामना कैसे करना है तथा एक कुशल नेतृत्वकर्ता कैसे बनना है, यह बतलाया गया है। साथ ही एक अकादमिक नेतृत्व-कर्ता के रूप में शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं

LIMITED EDITION

प्रत्येक विद्यालय का प्रत्येक बच्चा अपने साथ ज्ञान, भाषा, एंव सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को लेकर आता है ऐसे में हमें मित्रता पूर्ण वातावरण निर्मित कर सकारात्मक अधिगम संस्कृति का विकास करना चाहिए - जिसमें निम्न मुद्दे मुख्य हैं →

- विद्यालय नेतृत्व की संकल्पना व समझ
- आपदा की स्थिति में विद्यालय नेतृत्व
- छात्र अधिगम वृद्धि में सहायक
- विद्यालय में अधिगम संस्कृति का विकास
- संदर्भ आधारित विद्यालय विकास योजना

वर्तमान में Covid-19 के संकटकाल में शाला प्रमुखो को अतिरिक्त जिम्मेदारी लेने की जरूरत है मोबाइल, फोन, Whatsapp, अन्य संचार माध्यमो से अपने शिक्षको व छात्रो से निरंतर संपर्क करना बहुत जरूरी है यहां पर विद्यालय प्रबंधन समिति को भी सूचनाओ का वाहक बनाया जा सकता है।

विद्यालय विकास के मुख्य क्षेत्र →

एक शाला प्रमुख होने के कारण आपको नेतृत्व विकास के राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में वर्णित सात मुख्य बिंदुओ पर कार्य करना होगा। ये सातो बिंदु निम्न हैं →

1. विद्यालय नेतृत्व का दृष्टिकोण →

यह शाला प्रमुख एंव अध्यापको के लिए अति महत्व-पूर्ण है। विद्यालय नेतृत्व का दृष्टिकोण का विकास हमें विद्यालय की वर्तमान बुनियादी वास्तविकताओं का आकलन कर सकने एंव विजन बनाने में मदद करता है। आप सहयोगात्मक और दल कार्य के माध्यम से प्रत्येक बच्चे के समग्र विकास के उद्देश्य से इस दृष्टिकोण को साकार करने की यात्रा शुरू कर सकते हैं।

2. स्वयं का विकास →

स्वयं की क्षमताओ, दृष्टिकोण, एंव मूल्यो के संबंध में स्वयं, शिक्षको, स्टाफ, छात्रो के प्रति सकारात्मक सोच विकसित कराना ही इसका उद्देश्य है। इसके साथ ही एक नेतृत्वकर्ता की भूमिका को समझते हुये चिंतन, मनन, अंतः क्रिया के द्वारा आत्म सुधार किया जा सकता है। जिसके परिणाम स्वरूप हमें किसी भी चुनौती पर सकारात्मक जवाब जैसे हाँ, इसका सामना मैं कर सकता हूँ। या कर सकती हूँ, का विकास होता है। जिससे विद्यालय तथा स्वयं का रूपांतरण संभव हो पाता है।

3. शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का रूपांतरण →

इस भूमिका का महत्तव विद्यालयो में शिक्षण प्रक्रिया को बाल केंद्रित शिक्षा बना कर रुपान्तरित करना है। इसमें हमें यह चिंतन करने की जरूरत

LIMITED EDITION

है कि शिक्षण अधिगम प्रक्रियाएं कैसी हो, बच्चो के ठहराव की योजनाएं क्या होनी चाहिए, बच्चो को कैसा व्यवहार मिलना चाहिए। बच्चो को खेल-2 में शिक्षा तथा आनंदमयी वातावरण मिलना चाहिए। इसके साथ-2 शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओ में कक्षा का अवलोकन, शिक्षको को फीडबैक देना. उनके लिए सलाहकार, परामर्शदाता बने।

4. दल बनाना एंव दल का नेतृत्व करना →.

विद्यालय में निर्धारित लक्ष्यो की प्राप्ति व अपने विद्यालय की शैक्षणिक गुणवत्ता बढाने के लिए दल बनाना एंव उसका नेतृत्व करना, विद्यालय प्रमुख की महत्वपूर्ण भूमिका है। दल बनाकर कार्य करने / कराने से शाला स्तर में आई सभी चुनौतियो का सामना किया जा सकता है।

5. नवाचारों का नेतृत्व →.

विद्यालय स्तर में आई हर समस्या का समाधान नवाचार ही है - नवाचार से विद्यालय में समस्या समाधान के अलावा सबका समावेशन करना भी शामिल है। इन सभी नवाचारो का नेतृत्व करना शाला प्रमुख का कार्य है इसके अभाव शाला प्रमुख नवाचारी शिक्षक का प्रोत्साहन करें व मनोबल बढाने के साथ-2 अन्य शिक्षको को भी नवाचार करने के लिए प्रेरित करें।

LIMITED EDITION

नवाचार से अधिगम सरल एवं प्रभावी हो जाता है। विद्यालय की प्रक्रियाओं में नवाचारों का समावेश करने से बच्चो के साथ-2, शिक्षको, पालको व समुदाय के लिए भी सीखना एक आनंददायक अनुभव बन सकता है।

6. साझेदारियों का नेतृत्व →. विद्यालय में विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चे अलग-2 अनुभवो के साथ आते हैं, हम जब उनकी सामाजिक व भावनात्मक जरूरतो पर ध्यान देते हैं और उनसे भिन्नत जुड़ते हैं तो वे भी हमसे जुड़ कर कुछ सीखते हैं। यह भूमिका हमें विद्यालय के स्थानीय समुदाय के साथ भागीदारी निर्मित करने में मदद करती है।

7. विद्यालय प्रशासन का नेतृत्व →.

यह भूमिका विद्यालय को हर क्षेत्रो में आगे बढ़ाने के लिए प्रशासनिक व वित्तीय पहलुओ पर केन्द्रित है। यह हमें राज्य सरकार द्वारा जारी प्रशासनिक नियमों व दिशानिर्देशों को समझने के लिए प्रोत्साहित करती है, साथ ही विद्यालय के वित्त, बजट, धन का उपयोग कैसे करें इसकी भी जानकारी देता है।

ये सातो मुख्य क्षेत्र शिक्षको व शाला प्रमुखो के ज्ञान, कौशल, सकारात्मक अभिवृत्ति के विकास में योगदान करते हैं।

आपदा की स्थिति में शाला नेतृत्व →

आपदा की स्थिति में शाला नेतृत्व की जिम्मेदारी काफी बढ़ जाती है। जैसे कि वर्तमान समय में Covid-19 के इन मुश्किल दिनो में शैक्षिक प्रक्रिया में काफी बदलाव आया है। अब सभी स्कूल, कालेज बंद हैं, ऑनलाइन अधिगम कार्य कराया जा रहा है। ऐसे में शाला प्रमुख व सभी शिक्षको के सामने प्रशासनिक कार्यों एंव बच्चो की पढ़ाई संबंधी कई चुनौतियां सामने आ खड़ी हुई हैं।

• आपदा में शिक्षको / प्रमुखो में निम्न गुण होने चाहिए →

- सकारात्मक सोच
- नवाचारी सोच
- रचनात्मक विचारो को मूर्त रूप देना
- पालक व समुदाय से समुचित सहयोग
- प्रतिरोधक्षमता व लचीलापन
- संचार माध्यमो का कौशल प्राप्त करने का प्रयास - Google meet, Zoom, Microsoft Teem, And Apps का प्रयोग सीखना।

• शाला प्रमुख द्वारा उठाये जाने वाले कदमो के बिंदू →

- छात्र, पालक, समुदाय से आवश्यक संवाद हो।
- शिक्षको के साथ मिलकर हर छात्र से फोन पर

LIMITED EDITION

या व्यक्तिगत रूप से संपर्क करें।

- शिक्षकों, छात्रों, पालकों के साथ योजनाबद्ध तरीके से संपर्क नियमित रूप से करें।
- छात्रो व पालको को उनके स्वास्थ्य संबंधी दिशा निर्देश दिये जाने चाहिए।
- पालको व छात्रो को सामाजिक-मनोवैज्ञानिक तरीके से विश्वास दिलायें कि इस मुश्किल घड़ी में भी पढ़ाई रुकेगी नही।
- प्रत्येक कक्षा व प्रत्येक विषय के अधिगम लक्ष्यो को जानकर आनलाइन कक्षाओं का नियोजन करवाना।
- सीखने की कई गतिविधियों में बच्चो व उनके पालको को शामिल करवायें।
- स्वयं के साथ-2 शाला के सभी शिक्षको को ICT सीखने हेतु प्रोत्साहित करें।
- व्यावसायिक अन्वयन हेतु वेबीनार एंव अन्य Online मंचो का हिस्सा बनें/बनायें।
- दूरस्थ क्षेत्रो में जहां इन्टरनेट संभव नही है, वहां नवाचारी तरीका अपनायें।
- अपने शिक्षक साथियो को आनलाइन संसाधनो को सांझा करें।
- गांव में खुले स्थान पर सामाजिक दूरी बनाते हुये सीमित बच्चो को बैठाकर शिक्षण संबंधी चर्चा/संवाद करें।
- मोहल्ला क्लासो में समूहो का निर्माण करवायें।
- रेडियो व दृश्य उपकरणो का प्रयोग कर शैक्षणिक गतिविधियां संपन्न करवायें।
- तकनीकि रूप से वंचित बच्चो हेतु अपनी पहुंच बनायें व गुणवत्तापूर्ण अधिगम प्रक्रिया के नियोजन में शामिल होवें।

LIMITED EDITION

विद्यालय नेतृत्व : संकल्पना →.

शाला स्तर पर नेतृत्वकर्ता शाला प्रमुख तो हैं ही उनके साथ - 2 प्रत्येक अध्यापक नेतृत्वकर्ता हैं। लेकिन क्या हमारे पास सामान्य एवं जटिल परिस्थितियो में कार्य करने के लिए स्वप्रेरणा, रुचि व पहल लेने की क्षमता है? क्या हम संवेदनशील व आत्म-विश्वासी हैं?

यदि आप केवल पद द्वारा शाला नेतृत्वकर्ता हैं तो आप एक प्रशासक / प्रबंधक की तरह काम करेंगे जबकि यदि आप अपने व्यवहार में भी नेतृत्वकर्ता का कार्य करेंगे तो आप प्रशासनिक व प्रबंधन की जरूरतो के बाहर जाकर भी आत्मविश्वास पूर्वक पहल कर पायेंगे।

एक कुशल विद्यालय नेतृत्वकर्ता के रूप में आपको चाहिए कि सभी शिक्षको, पालको, छात्रो को एक साथ लेकर चलें तथा साझे विजन का निर्माण करें, साथ ही चुनौतियों का रचनात्मक रूप से हल खोजें, सभी की बातो को ध्यान से सुने एवं चिंतन, मंथन के द्वारा सही निर्णय लें।

अपने विद्यालय की वर्तमान परिस्थितियों का कुशलतापूर्वक आकलन करें व कमियो को दूर करने का भरसक प्रयास करें।

आप वर्तमान परिस्थितियो का निम्न मापदंडो के आधार पर विश्लेषण करें →

- भौतिक संसाधन
- छात्रो का अधिगम स्तर
- शिक्षको की प्रभावोत्पादकता

LIMITED EDITION

- छात्रों की अधिगम जरूरतों, उनकी पृष्ठभूमि व उनकी समझ व क्षमताओं को समझना
- शाला के समुदाय की विशेषताएं एंव अभिभावकों की समझ।

इन विश्लेषणात्मक प्रक्रिया से हम अपने विद्यालय की वर्तमान परिस्थिति को जान पायेंगे तथा प्रत्येक छात्र के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा कैसे दें ताकि विद्यालय का स्तर और बेहतर किया जा सके।

• लीडर बाई एक्शन के गुण →.

- पहलकर्ता
- स्वप्रेरित
- अभिप्रेरितकर्ता
- आत्मविश्वासी
- सहानुभूति व्यवहार कर्ता

कुशल नेतृत्वकर्ता बनने के लिए यह चाहिए कि आप अपने अंदर विद्यमान ज्ञान, कौशल एंव अभिवृत्ति का मूल्यांकन करें जिससे विद्यालय की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।
इनमें से ज्ञान के क्षेत्र में प्रशासनिक व वित्तीय नियमो की समझ होने के साथ-2 शिक्षण शास्त्र - विषयवस्तु ज्ञान व उसके प्रयोग पर भी अपनी समझ को बढ़ाना है।
कौशल के क्षेत्र में संवाद, निर्णय लेने की क्षमता, ICT का प्रयोग की दक्षता, समस्या समाधान करने की दक्षता शामिल है।
अभिवृत्ति / दृष्टिकोण के क्षेत्र में सकारात्मक सोच पहल, सहयोग की भावना शामिल है जिनमें ये आयें कि हर बच्चा सीख सकता है।

LIMITED EDITION

▲ स्वप्रेरणा →

नेतृत्व की संकल्पना को और बेहतर बनाने / समझने के लिए स्व और प्रेरणा को नेतृत्व का प्रमुख गुण माना गया है। एक नेतृत्वकर्ता के लिए स्वयं की समझ अत्यंत आवश्यक है। इस समझ से हम स्वयं के दृष्टिकोण एवं क्षमताओं के प्रति जागरूक हो सकते हैं। तथा अपने अंदर व बाहर बदलाव लाने के लिए सक्षम बनते हैं। स्वयं की समझ की शुरुआत हम आत्मचिंतन के अभ्यास से कर सकते हैं जो कि एक स्व अधिगम प्रक्रिया का अंश है। इसके माध्यम से हम अपनी अभिरुचियों व क्रियाओं पर विचार-प्रश्न-पुर्विचार कर सकते हैं जो कि एक प्रभाव-शाली नेतृत्वकर्ता बनने के लिए महत्वपूर्ण है।

▲ गतिविधि 1 :-

प्रभावशाली नेतृत्वकर्ता बनने के लिए आप में क्या गुण होने चाहिए ? उनमें से कुछ निम्न हैं —

- पहल करना
- सकारात्मक दृष्टिकोण रखना
- स्वप्रेरित होना
- परिवर्तन के लिए सतत प्रयत्नशील

आपके अनुसार और कौन-2 से गुण एक प्रभावशाली नेतृत्वकर्ता के होने चाहिए ? चिंतन करके URL में अपने विचार दें।

https://bit.ly/mpn-13-1

LIMITED EDITION

नेतृत्व की परिभाषा →

सामान्य तौर पर किसी संगठन का नेतृत्व करने वाले को ही नेतृत्वकर्ता कहा गया है।

नेतृत्व को परिभाषित करने वाले तीन शब्दो से नेतृत्व पर अपनी समझ को विकसित करते हैं।

१. **शक्ति →** पुरस्कार और दण्ड को माध्यम बनाकर लोगो के व्यवहार में परिवर्तन लाने की क्षमता का ही दूसरा नाम शक्ति है। ये शक्तियां भी तीन प्रकार की होती हैं - ① बलआधारित शक्ति
② लाभकारी शक्ति (जैसे कि पैसा / नकद)
③ मानकीय शक्ति (मानदंड, नियमो, विनियमों संबंधी)

२. **प्राधिकार** (Authority) → प्राधिकार वह अधिकार है जो कि किसी सरकारी क्षेत्र में विशेष अधिकारी व व्यक्ति के पास है जिसके आधार पर वे अपने क्षेत्र में अपना नेतृत्व स्थापित करते हैं।

३. **प्रभाव** (Influence) ⇒ पुरुस्कार, दण्ड, प्राधिकार के उपायो के बिना अन्य व्यक्तियों के व्यवहार में बदलाव लाने की क्षमता ही प्रभाव है।

इन तीनो में से नेतृत्व करने की क्षमता / तरीका अगर सर्वश्रेष्ठ है तो वो है प्रभाव। क्योकि प्रभाव का असर प्रबल, चिरस्थायी एंव टिकाऊ होता है। अतः उपयुक्त नेतृत्व के बारे में एक निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि -

"नेतृत्व प्रभावित करने वाली एक प्रक्रिया है।"

LIMITED EDITION

विद्यालय में विद्यालय प्रमुख को अलग - अलग भूमिकाएं निभानी पड़ती हैं। मगर यहां पर आप स्वयं निर्णय लें कि आप किसकी भूमिका अपने विद्यालय स्तर पर निभा रहे हैं।

प्रशासक	प्रबंधक
नियमो व विनियमों का अनुपालन	कार्यों व रिश्तो को मधुर बनाये रखना

नेतृत्वकर्ता
विजन के तहत कार्य करना

" प्रशासक के रूप में केवल नियमो और विनियमो की सीमा में रहकर कार्य किया जाता है। यानि इसका दायरा काफी संकीर्ण रहता है, यह एक नौकरशाही रूप में देखा जा सकता है। इसमें नियमो में बंध कर रहना होता है और निर्णय लेने की आजादी भी नही होती। "

" वही जब हम अपने विवेक के द्वारा शाला की विभिन्न गतिविधियों, विभागों की निगरानी कर शाला को सुचारू रूप से चलाने का प्रयास करते हैं तो हम प्रबंधक की भूमिका में काम कर रहे होते हैं जो कि प्रशासन की तुलना में थोड़ा बेहतर होता है। "

LIMITED EDITION

" इन उपरोक्त दोनो भूमिकाओ मे से नेतृत्वकर्ता की भूमिका काफी महत्तवपूर्ण हैं।

एक नेतृत्वकर्ता की अपनी विजन या दूरदृष्टि होती हैं। वह दलों के माध्यम से विजन के क्रियान्वयन का प्रयास करता हैं। "

▲ विद्यालय नेतृत्व → विद्यालय नेतृत्व का अर्थ स्वयं एंव अन्य हितधारको जैसे छात्र, अध्यापक, पालक व समुदाय को प्रभावित करने की प्रक्रिया हैं। साथ ही विद्यालय सकारात्मक सोच व कार्य से विद्यालय का रूपांतरण किया जाये जिसका मुख्य लक्ष्य प्रत्येक छात्र को गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान करना हैं।

▲ अध्यापक नेतृत्व → अध्यापक नेतृत्व निरंतर ज्ञान, कौशल व अभिवृत्ति के विस्तार में संलग्न होता हैं। स्वयं के साथ-साथ उसे अपनी कक्षा के अधिगम को भी विकसित करना होता हैं। अध्यापक नेतृत्व में और भी कुछ कार्य करने होते हैं

- शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं में उन्नति के लिए नये-2 नवाचार करना।
- चिंतनशील अभ्यासकर्ता बनना।
- सीखने सिखाने का संवाहक बनना।
- बच्चो को अवसर देना।
- मित्रवत व्यवहार स्थापित करना।

LIMITED EDITION

▲ छात्र अधिगम में विद्यालय नेतृत्व का महत्व →

छात्रों के अधिगम में अध्यापक सहायक होता है। मगर शोध के आधार पर यह बतलाया गया है कि अध्यापक के अलावा भी विद्यालय नेतृत्व छात्रों के अधिगम पर प्रभाव डालता है। विद्यालय नेतृत्व अध्यापकों को प्रभावी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के संचालन में एक वातावरण निर्माण करता है। विद्यालय नेतृत्व सीखने के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराने के साथ-2 अधिगम संस्कृति भी विकसित करता है।

छात्रों के अधिगम पर विद्यालय नेतृत्व के 4 मुख्य प्रभाव बताए गये हैं — ① सीधा प्रभाव ② मध्यस्थ प्रभाव ③ पारस्परिक प्रभाव ④ प्रतिलोम प्रभाव

• **सीधा प्रभाव →** जब विद्यालय नेतृत्वकर्ता अध्यापकों को सहयोग एवं परामर्श प्रदान करने के साथ स्वयं शिक्षण कार्य में संलग्न होता है तो छात्रों के अधिगम पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

• **मध्यस्थ प्रभाव →** मध्यस्थ प्रभाव में विद्यालय नेतृत्व के अलावा अध्यापकों के व्यावसायिक कौशल का विकास कराकर छात्र अधिगम को प्रभावित किया जाता है।

• **प्रतिलोम प्रभाव →** प्रतिलोम प्रभाव को सीधा प्रभाव का विपरीत प्रभाव भी कहा जाता है। सीधे प्रभाव में शाला प्रमुख, छात्र अधिगम में सीधा प्रभाव डालता है जबकि प्रतिलोम प्रभाव में छात्र विद्यालय नेतृत्व एवं उनके क्रियाकलापों पर असर डालते हैं। छात्रों की विभिन्न अधिगम संबंधी जरूरतों एवं प्रतिभाग करने के तरीके, अध्यापक एवं विद्यालय नेतृत्व पर प्रभाव डालते हैं।

▲ गतिविधि 3 :-

विद्यालय नेतृत्व का छात्र अधिगम पर प्रभाव (चार प्रकार)., इस अवधारणा को आप अपने विद्यालय के संदर्भ में कैसे क्रियान्वित करेंगे ? चिंतन कर अपने विचार निम्न लिंक से सांझा करें।

https://bit.ly/mpn-13-3

▲ छात्र अधिगम में सुधार हेतु अकादमिक नेतृत्व →

अकादमिक नेतृत्व से तात्पर्य विद्यालय प्रमुख के उस ज्ञान, कौशल व अभिवृत्ति से है जो कि वह अपने विद्यालय के शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं में छात्र अधिगम की वृद्धि के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए सकारात्मक बदलाव लाता है। विद्यालय प्रमुख, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सुधार लाने के लिए शिक्षक की भूमिका को समझता है तथा छात्रों की जरूरतों को समझकर उनके सर्वांगीण विकास में मदद करता है।

विद्यालय प्रमुख का दायरा विस्तृत तथा अध्यापकों

LIMITED EDITION

कक्षा तक सीमित होता है।

• छात्रों के व्यक्तिगत, सामाजिक गुणों का विकास, उनका कल्याण एवं उनके अधिगम स्तर को बढ़ाने का अंतिम उत्तरदायित्व, विद्यालय नेतृत्वकर्ता का ही हैं। अतः अध्यापकों का व्यावसायिक उन्नयन व छात्रों के शिक्षण संबंधी परिणामों को सुनिश्चित करना ही अकादमिक नेतृत्वकर्ता की भूमिका होती हैं। कुछ भूमिकाएं निम्न हैं — (अकादमिक नेतृत्वकर्ता की) →

1. छात्र अनुकूल अधिगम वातावरण का संचालन
   " शाला प्रमुख प्रिंट सामग्री, ICT व्यवस्था, बालकेन्द्रित शिक्षा, पालक व समुदाय से संवाद, रोचक शिक्षण सहायक सामग्री व वातावरण को निर्मित / उपलब्ध करायें।
2. अध्यापकों को अकादमिक सहयोग देना →
3. अध्यापकों का प्रशिक्षण एवं सलाह →
4. सभी शिक्षकों के साथ मिलकर विद्यालय शैक्षणिक कैलेण्डर का निर्माण करे।

▲ अकादमिक नेतृत्व :- अकादमिक सहायता देना →

विद्यालय प्रमुख का यह दायित्व है कि वे अपने अध्यापकों से प्रतिदिन या साप्ताहिक चर्चा जरूर करें कि शिक्षण अधिगम के कार्य में क्या कठिनाईयां आ रही हैं तथा आने वाली समस्या का समाधान कैसे निकाला जाये। संस्था प्रमुख व शिक्षकों

LIMITED EDITION

के उस प्रकार शैक्षिक संवाद से समस्याओ का हल निकलना संभव है जैसे कि कई गतिविधियां कराने के बावजूद भी कुछ बच्चो की सहभागिता नही रहती इसके लिए शिक्षक उन बच्चो से जुडें एंव उनकी भाषा में बात करें व उनके मन-पसंद के आधार पर शिक्षण कार्य करायें जैसे कि कुछ बच्चो को नाटक, प्रोग्राम पसंद हैं तो अपने फोन के द्वारा कुछ प्रोग्राम दिखायें।

अर्थात् एक विद्यालय नेतृत्वकर्ता का यह काम हैं कि वह शिक्षक को शिक्षण कार्य कराने के लिए पूरी छूट प्रदान करे व प्रेरित करे। देखा जाए तो सहयोग, अध्यापको का प्रशिक्षण, सलाह और यह सुनिश्चित करना कि सभी छात्रो के लिए अधिगम स्तर व शिक्षण अधिगम प्रक्रियाएं बेहतर हों, ये सभी अकादमिक नेतृत्व के अहम चरण हैं।

▲ गतिविधि 5 : निष्क्रिय व सक्रिय अधिगम

• निष्क्रिय अधिगम क्या है। →

1. रट्टा प्रणाली को प्रोत्साहित करना।
2. छात्रो की विषय ज्ञान की अवधारणा को न जानना।
3. मूल्य आधारित शिक्षा की ओर न ले जाना
4. शिक्षक बच्चो व अधिगम से जुड़े सामान्य सिद्धांतो को ही शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में प्रयोग करते हैं।
5. चिंतन, मनन व स्व अध्ययन के कम अवसर।
6. सामाजिक वास्तविकताओ, छात्रो व अधिगम प्रक्रियाओ के बारे में छात्रो की मान्यताओ का निराकरण न करना।

LIMITED EDITION

7. शिक्षार्थियो के लिए ज्ञान को बाहरी एंव ऐसा माना जाता है जिसे प्राप्त किया जाता है।
8. शिक्षार्थी दिये गये कार्यो, कक्षा में होने वाली परीक्षाओ, क्षेत्र कार्यो एंव शिक्षण अभ्यासों पर व्यक्तिगत रूप से कार्य करते हैं।

• सक्रिय अधिगम क्या-क्या हैं। →.

1. छात्रो को समाज में अपनी स्थिति, अपनी मान्यताओं का पता लगाने के लिए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में स्थान दिया जाता है।
2. शिक्षक बच्चो के सामा०, सांस्कृतिक और राजनीतिक संदर्भो को समझते हैं जहां बच्चे पलते व विकसित होते हैं।
3. रट्टा प्रणाली को हतोत्साहित करना, शिक्षण अधिगम को आंनददायी, बालकेंद्रित, सहभागी अधिगम अनुभवो जैसे - नाटक, प्रोजेक्ट, संवाद, अवलोकन, भ्रमण सुनियोजित करता।
4. समाज के पुनः निर्माण हेतु जीवन के लोकतांत्रिक तरीको, समानता, न्याय, स्वतंत्रता, धर्मनिरपेक्षता को बढावा देना।
5. समीक्षात्मक विचार कौशलो के द्वारा शिक्षण, अधिगम, व्यक्तिगत व सामा० अनुभवों के साझा संदर्भो में ज्ञान को अर्जित किया जाता है।
6. ज्ञानात्मक अवधारणाओं को परखने, जानने एंव चुनौती देने हेतु पर्याप्त अवसर देना।
7. शिक्षक छात्रो को गहन विचार विमर्श, चिंतन में संलग्न रखते हैं तथा चिंतनयुक्त लेख लिखते हैं।

LIMITED EDITION

8. बच्चो को दल में काम करने, सहचर्चा, प्रोजेक्ट बनाने, सामूहिक प्रस्तुतियो को करने में प्रोत्साहित करना।

▲ अकादमिक पर्यवेक्षण की तकनीकी →

संस्था प्रमुख अपने विद्यालय में शैक्षणिक गुणवत्ता में उत्तरोत्तर वृद्धि कराने के लिए कुछ तरीके अपनायें जैसे कि →.

1. पूर्वें- वर्णन करें- पूर्वें : प्रतिपुष्टि द्वारा बेहतर शिक्षण →

यह तकनीक पर्यवेक्षक (संस्था प्रमुख) को आधिकारिक भूमिका से लोकतांत्रिक भूमिका की ओर ले जाती है, इसमें शिक्षक एंव संस्था प्रमुख दोनो एक साथ सीखते हैं। इस तकनीक में इन दोनो व्यक्तियो की वार्तालाप से शिक्षण पद्धति में सुधार लाया जाता है। इसमें संस्था प्रमुख शिक्षक से उसके पढाने के तौर तरीके, अंतिम लक्ष्य को पूछे फिर शिक्षक की बात को ध्यान से सुने अंतिम में बिना आलोचना किये सकारात्मक सुझाव संस्था प्रमुख की तरफ से दिये जायें।

2. लर्निंग राउंड →

लर्निंग राउंड में शिक्षक व संस्था प्रमुख दोनो एक दल के रूप में शिक्षण प्रणालियों का अवलोकन करते हैं जिसकी समय सीमा 30 मिनट हो।

▲ विद्यालय में अधिगम संस्कृति का विकास →

विद्यालय परिसर के अंदर आने वाला हर व्यक्ति सीखता - सिखाने की प्रक्रिया से जुड़ता है। अर्थात् शाला में केवल छात्र ही नही सीखते बल्कि शिक्षक और शाला प्रमुख भी सीखते हैं चाहे वे आपस में बात करे, संवाद करें, अवलोकन करें आदि से।

विद्यालय में शिक्षण कार्य केवल पुस्तको से न कराया जाये बल्कि अन्य स्त्रोतो जैसे- आस पास के परिवेश, T.L.M., चित्र, T.V., फोन की वीडियो, गतिविधि, से कराया जाना भी उचित है।

विद्यालय में अधिगम संस्कृति निर्माण के कुछ बिंदु निम्न हैं। —

1. शिक्षक, छात्र, व समुदाय के लिए सीखने के अवसर प्रदान करना।
2. विद्यालय को अधिगम केंद्रित संस्थान बनाना
3. नवाचारो का स्वागत करना

▲ विद्यालय विकास योजना →

यह ऐसी योजना है जिसमें एक निश्चित अवधि में विद्यालय द्वारा निर्धारित वांछित प्रतिफलों की प्राप्ति हेतु एक विजन, लक्ष्य, उद्देश्य एवं रणनीतियां बनायी जाती हैं। जिसे शैक्षणिक व गैर शैक्षणिक स्टाफ, पालक, समुदाय सभी मिलजुलकर बनाते हैं।

▲ विजन :-

विद्यालय के विकास के लिए दिशा निर्देश प्रदान करने के लिए विजन बनाना प्रथम चरण है, इसका दायरा व्यापक है। योजना निर्माण के पूर्व विजन बनाना जरूरी है। जिसके बाद ही योजना क्रियान्वयन की रूपरेखा बनाई जा सकती है। विजन को विकसित करने के लिए भविष्य के लक्ष्य पर चिंतन होना चाहिए एवं विजन की एक निश्चित अवधि हो (3-5 वर्ष)

• विद्यालय विकास योजना के तीन स्तर →

① योजना ② क्रियान्वयन ③ अनुश्रवण व मूल्यांकन

• इस पूरी प्रक्रिया के 6 चरण हैं जो निम्न हैं।

1. समितियो/दलो का गठन :- विद्यालय विकास योजना व क्रियान्वयन हेतु दल का गठन किया जाता है इसमें कम-से कम 4 दल होने चाहिए-

ⓐ योजना दल ⓑ नेतृत्व दल

ⓒ कार्य दल ⓓ मूल्यांकन दल

LIMITED EDITION

2. बेस लाइन डाटा
3. विजन का निर्माण
4. प्राथमिकताओं का निर्धारण
5. लक्ष्य व उद्देश्य
6. अनुश्रवण एंव मूल्यांकन तंत्र

▲ विद्यालय शिक्षा में ICT संबंधी पहल :-

विद्यालय में शिक्षा को और ज्यादा बेहतर बनाने के लिए नवाचार, T.L.M., गतिविधियों के अलावा ICT (सूचना & संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जाना उचित होगा।

ICT के अन्तर्गत NROER (नेशनल रिपॉजिटरी ऑफ ओपेन एजुकेशनल रिसोर्सेज), E पाठशाला दीक्षा, ऑडियो, वीडियो, ग्राफिक्स, एनिमेशन, डिजिटल किताबे, नक्शे, आदि के द्वारा शिक्षण को और आसान बनाया जा सकता है। साथ ही जहां पर इन्टरनेट की उपलब्धता नामुमकिन है वहां पर हम बच्चो को स्वयंप्रभा के तहत 24x7 घंटे चलने वाला D.T.H., टीवी चैनल एक अच्छा माध्यम है शिक्षण का।

धन्यवाद
दीपेन्द्र त्रिपाठी

LIMITED EDITION

निष्ठा डिजिटल शिक्षक प्रशिक्षण

प्रशिक्षण डायरी

कोर्स 13 स्कूल नेतृत्व

अवधारणा एवं प्रयोग

www.educationportal.org.in/training